

आजाद

शोध छात्र

विषय हिंदी

शोध निर्देशिका

डॉ हेमलता सुमन

नारायण कॉलेज , शिकोहाबाद

फ़िरोज़ाबाद (उत्तर प्रदेश)

भूमिका-

उपन्यास गद्य की एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विधा है , जिसमें समाज के लगभग हर वर्ग पर लेखन कार्य हो रहा है । इनमें से एक वर्ग है विद्यार्थी वर्ग , इस वर्ग पर आधारित कथानक एवं कथावस्तु को लेकर इक्कीसवीं सदी के वर्तमान समय में हिन्दी गद्य साहित्य की उपन्यास विधा में कुछ नए और युवा लेखकों ने महत्वपूर्ण और मार्मिक लेखन कार्य सम्पन्न किया है , जिसमें से एक प्रमुख उपन्यास ' डार्क हॉर्स ' भी है , जो अपनी प्रसिद्धि के कारण खूब चर्चा में रहा है । इस प्रसिद्ध उपन्यास के लेखक नीलोत्पल मृणाल हैं , जिन्होंने खुद अपनी तैयारी के दौरान अपना 8 साल का एक लंबा सफर दिल्ली के इस जादू भरे मुखर्जीनगर में व्यतीत किया है ।

साहित्य आकदमी युवा पुरस्कार से सम्मानित नीलोत्पल मृणाल इक्कीसवीं सदी की नई पीढ़ी के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखकों में से एक हैं , जिनमें कलम के साथ-साथ राजनैतिक और सामाजिक मुद्दों पर जमीनी रूप से लड़ने का तेवर भी है । इसीलिए इनके लेखन में भी सामाजिक विषमताएँ , विडंबनाएँ और आपसी संघर्ष बहुत स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं ।

पद्मश्री मालिनी अवस्थी के अनुसार “ संघर्ष , वक्त और आत्ममंथन से निखरे नीलोत्पल ने अपने अनुभव को निचोड़कर एक रोचक कथा बुन डाली है , जो वास्तव में अनगिनत सपनों की अनकही सच्ची कहानियाँ हैं , जिसे पढ़कर आपको लगेगा की मानो आप मुखर्जी नगर के किसी तिमंजिले की खिड़की से सभी पात्रों को खुद देख रहे हैं । ”

हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध समकालीन कथाकार और महिला लेखनधारा की वरिष्ठ लेखिका चित्रा मुद्गल ने इस उपन्यास पर अपने विचार प्रकट करते हुये कहा है “ बेहद दिलचस्प उपन्यास ! अपने पहले ही उपन्यास में नीलोत्पल ने बड़ा साहस दिखाते हुए बेवाकी से यथार्थ की तलछट को कुरेदते हुए एक ऐसी दुनिया का सच लिखा है , जिस पर पहले कभी इतना नहीं लिखा गया । ”

हिन्दी के प्रसिद्ध युवा लेखक एवं आलोचक राजीव रंजन गिरि के अनुसार “ हिन्दी – उर्दू इलाके में लोगों की हसरत होती है अपने बच्चों को आईएस बनाना । अगर यह मुमकिन नहीं हो तो प्रशासनिक पदानुक्रम का कोई सोपान हासिल करना । सामाजिक सम्मान और आर्थिक सुरक्षा के लिए प्रशासनिक पद साधन है और साध्य भी । इस हसरत को यथार्थ बनाने के द्वंद्व में जीवन का बहुलांश बीत जाता है । न सिर्फ अभ्यर्थी बल्कि उसके परिवार एवं रिश्तेदार इस द्वंद्व में गुनगुना अहसास करते हुए जीवन की तकलीफ़ें काट देते हैं । प्रतियोगियों की जद्दोजहद की मायानगरी का नाम है मुखर्जी नगर और इस परिधि पर बसा इलाक़ा और यहाँ सपनों के लिए संघर्षरत युवाओं का जीवन हिन्दी कथाकारों की नजरों से ओझल था । इस रोचक विषय पर नीलोत्पल मृणाल ने यह पठनीय उपन्यास लिखकर एक बड़ी कमी को दूर किया है । ”

कालतत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा-

उपन्यास विधा का मूल्यांकन जिन निश्चित मानदंडों के अनुसार होता है , उन्हें उपन्यास के कला के तत्व (औपन्यासिक तत्व) कहते हैं । ये तत्व अग्रलिखित होते हैं – शीर्षक , कथानक , पात्र एवं चरित्र-चित्रण , कथोपकथन (संवाद) , देशकाल एवं वातावरण , भाषा-शैली , उद्देश्य । अतः प्रस्तुत उपन्यास की समीक्षा इन्हीं औपन्यासिक तत्वों के आधार पर की गई है ।

शीर्षक की सार्थकता – उपन्यास के नाम को ही उपन्यास का शीर्षक कहते हैं । उपन्यास का प्रारम्भ यदि उसका प्रवेश द्वार है , तो उपन्यास का शीर्षक प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ ‘ स्वागतम् ’ है । उपन्यास में शीर्षक का महत्व सर्वोपरि है । अंग्रेजी विद्वान चार्ल्स वेटेट कहते हैं “ उपन्यास के श्रेष्ठ शीर्षक को विशेषता , आकर्षण , नवीनता एवं संक्षिप्तता से युक्त होना चाहिए । इससे यह जाना जा सकता है कि उपन्यास विधा का शीर्षक वही अच्छा या श्रेष्ठ माना जाता है , जो उपयुक्त , निश्चयात्मक , नवीन और लघु हो । शीर्षक वही उचित या अच्छा माना जाता है , जिसका संबंध उस उपन्यास के आरंभ के साथ-साथ अंत से भी हो एवं उसमें कथावस्तु को अवगत कराने की क्षमता हो । ”

हिन्दी समीक्षकों ने उपन्यास विधा के शीर्षक के सात भेद बताए हैं , जो इस प्रकार हैं – प्रधान पात्र से संबन्धित , प्रधान घटना से संबन्धित , प्रधान भाव अथवा विचार से संबन्धित , स्थान विशेष संबन्धित , पारवारिक सम्बन्धों से संबन्धित , उपन्यास के इतिवृत्त से संबन्धित , उपन्यास के अंत से संबन्धित । शीर्षक की इन कसौटियों के आधार पर समीक्षात्मक उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता को जाँचा – परखा जा सकता है ।

प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक ‘ डार्क हॉर्स ’ जो अंग्रेजी भाषा की एक कहावत से लिया गया है । डार्क हॉर्स का हिन्दी भाषा में अर्थ होता है ‘ छुपा रुस्तम ’ अर्थात् वह व्यक्ति जिसकी बातें , योजनाएँ रहस्यात्मक हों । इस उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता उपन्यास के अंतिम दो-तीन पृष्ठों से स्पष्ट हो जाती है । जिसमें मुख्य पात्र ‘ संतोष ’ अपने सभी प्रकार के रिश्तों से

अदृश्य होकर अपनी सफलता के साथ सबके सामने आता है। संतोष से संबंधित उसके मित्रों के मध्य होने वाले वार्तालाप उदारहण के रूप में प्रस्तुत हैं –

“ संतोष कहाँ गया, कैसा होगा ? यह वास्तव में किसी को भी पता नहीं चल पा रहा था। संतोष अभी लापता था। यह पहेली सुलझ ही नहीं पा रही थी। ”

“ अरे मनोहर लाल, मेरे भाई जल्दी आओ। संतोष मिल गया है। ” गुरु ने लगभग चीखते हुए कहा।

“ आओ न यार बहुत ऊँचाई पर मिला है। बत्रा सिनेमा के सबसे ऊपर वाली छत पर है। ” गुरु ने बताया।

संतोष की फोटो लगी हुई थी, वह आईपीएस बन चुका था। श्यामल सर की कोचिंग के हर पोस्टर में पूरे बत्रा पर उसकी तस्वीरें लगी हुई थीं।

कथानक – कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद मानते हैं कि “ उपन्यास जीवन का चित्र है, इसलिए उपन्यासों के कथानक का मूल आधार मानव जीवन है। ” कथानक रोचक और आकर्षक होना चाहिए। कथावस्तु में गतिशीलता एवं स्वाभाविकता होने से पाठक की जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। कथावस्तु का एक गुण है – मौलिकता। इस दृष्टि से भी यह उपन्यास सराहनीय है। घटनाएँ इस प्रकार नियोजित की गई हैं कि वे एक दूसरे से संबद्ध हो जायें। आधिकारिक कथा के साथ-साथ उसमें प्रासंगिक कथाएँ भी हैं किन्तु वे आधिकारिक कथा में मिल गयीं हैं तथा उसे पुष्ट करने का कार्य करती हैं।

डार्क हॉर्स, मुखर्जी नगर दिल्ली में रहकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों के जीवन पर आधारित है। इस उपन्यास में पूर्वाञ्चल से आए युवाओं के जीवन संघर्ष के हर लम्हे को लेखक ने अपनी झुकाव हिन्दी में उतारने की चेष्टा की है। कथानक की दृष्टि से यह उपन्यास अपनी सफलता की सीमा को प्राप्त करता है।

पात्र एवं चरित्र-चित्रण – किसी भी कथा में पात्रों का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। बिना पात्रों के कथा की गति में बाधा उत्पन्न होती है। साहित्य समीक्षकों ने पात्रों के अग्रलिखित भेद माने हैं – मुख्य पात्र, गौण पात्र, स्वतंत्र पात्र, परतंत्र पात्र, काल्पनिक पात्र आदि। पात्रों की संख्या सीमित एवं निश्चित होना भी उपन्यास विधा की सफलता का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य पात्र संतोष के साथ-साथ गौण पात्रों में राय साहब, मनोहर, गुरु के अलावा स्त्री पात्रों में विदिशा एवं पायल हैं, जो कि संख्या में अत्यधिक नहीं हैं।

लेखक ने चरित्र चित्रण के लिए लगभग सभी शैलियों को अपनाया है। कभी वे पात्र के बारे में स्वयं अपना मत व्यक्त करते हैं तो कभी दो पात्रों के वार्तालाप द्वारा तीसरे पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। घटनाओं के माध्यम से भी कहीं-कहीं चरित्रांकन किया गया है। पात्र एवं चरित्र-चित्रण के मापदंड के आधार पर यह एक सफल उपन्यास है। पात्रों के चरित्र-चित्रण का एक उदाहरण प्रस्तुत है – “ रायसाहब का पूरा नाम कृपाशंकर राय था। वे मूलतः यूपी के गाजीपुर से थे। रायसाहब

पिछले पाँच साल से मुखर्जी नगर में तैयारी के लिए रह रहे थे। कृपाशंकर के झड़ते बाल और तेजी से लटकती झुर्रियों के अदब में साथी उन्हें ‘रायसाहब’ कहते थे।”

कथोपकथन (संवाद) – संवाद मुख्य रूप से नाटक का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है मगर कथा साहित्य में भी इसका महत्व कम नहीं है। संवाद के लक्षणों में समीक्षकों ने संक्षिप्तता, सार्थकता, पात्रानुकूल आदि को प्रमुख माना है। संवाद की भाषा सरल एवं सहज होनी चाहिए, जिससे पाठक या श्रोता को समझने में समस्या का सामना न करना पड़े। संवादों की भाषा अत्यधिक तत्समी नहीं होनी चाहिए जैसी की जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों में संवादों की भाषा है।

प्रस्तुत उपन्यास संवादों के इन मानकों को पूरा करता है और संवाद की दृष्टि से सफलता प्राप्त करता है। इसके संवादों की भाषा संक्षिप्त एवं पात्रानुकूल है। उदाहरण के लिए –

“ चलिए रूम पर चलते हैं। ” रायसाहब ने हाथ से इशारा करते हुए कहा।

“ हाँ, चलिए देखें आपका महल। ” संतोष ने भरे उत्साह से कहा।

“ महल नहीं कुटिया कहिए। तपस्या करना होता है। ” रायसाहब ने मुस्कराते हुए कहा।

“ कितने का है रायसाहब कमरवा ? ” संतोष ने पूछा।

“ चार हजार प्लस बिजली पानी है संतोष जी। ” रायसाहब ने आँखें तरेरकर बताया।

देशकाल एवं वातावरण – उपन्यास को सजीव एवं स्वाभाविक बनाने में देशकाल या वातावरण का सर्वाधिक महत्व रहता है। प्रत्येक उपन्यास में किसी स्थान, समय और परिस्थिति का चित्रण होता है, इसी चित्रण को वातावरण की संज्ञा प्रदान की जाती है। सफल वातावरण पाठक के मन पर संवेदनात्मक प्रभाव डालता है। डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल ने इस संदर्भ में लिखा है – “ वास्तविक जीवन देश, काल और जीवन की विभिन्न सत् – असत् परिस्थितियों से निर्मित होता है। अतएव इन तत्वों का एक स्थान पर संचयन और चित्रण करना उपन्यास में वातावरण उपस्थित करता है। उपन्यास की कथावस्तु और उसके संचालक पात्रों का संबंध उक्त स्थितियों से होता है। ”

उपन्यास में देशकाल और वातावरण का चित्रण सरल, संक्षिप्त और पात्रों की मानसिक परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। प्रस्तुत उपन्यास में दिल्ली जैसे महानगर में बाहर से आकर तैयारी करने वाले छात्रों के माध्यम से यहाँ के देशकाल एवं वातावरण प्रभावी वर्णन किया गया है।

भाषा-शैली - भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन होती है। उपन्यास जनसामान्य की विधा है, इसलिए उपन्यास की भाषा ऐसी होनी चाहिए, सरल, सजीव और प्रवाहपूर्ण हो। सफल भाषा वही होती है, जो उपन्यास की कथावस्तु, पात्र – योजना,

शैली और वातावरण के अनुकूल हो। निरर्थक शब्द योजना और कठिन वाक्य संरचना उपन्यास के सौंदर्य तथा स्वाभाविक गति को नष्ट कर देते हैं। इसलिए उपन्यास की भाषा में प्रावह, क्षेत्रीयता, भावानुभूति, आलंकारिकता और बिम्बानुभूति आदि गुणों का होना अनिवार्य होता है। उसमें आवश्यकतानुरूप लोकोक्तियाँ एवं मुहावरों का प्रयोग भी होना चाहिए।

भाषा में क्षेत्रीयता का एक उदाहरण देखिए “एतना बिहाने-बिहाने असनान-ध्यान हो रहा है, कहाँ का जतरा है, मास्साब?” खैनी रगड़ते हुए ठाकुर जी ने पूछा।

किसी बात को कहने या लिखने के विशेष ढंग या प्रकार को शैली कहते हैं। शैली का संबंध केवल शब्दों से ही नहीं अपितु विचारों और भावों से भी होता है। शैली की कलात्मकता ही उपन्यास के प्रति पाठक की रोचकता में वृद्धि करती है।

उद्देश्य – प्रत्येक उपन्यास की रचना का एक उद्देश्य होता है। मनोरंजन से लेकर गंभीर समस्या निरूपण तक उपन्यास का उद्देश्य हो सकता है। उपन्यास की रचना के पीछे एक ऐसा उद्देश्य छिपा रहता है, जिससे पाठक अभिभूत होकर कुछ सोचने के लिए विवश हो जाता है। बाबू गुलाबराय ने उपन्यास के उद्देश्य के संबंध में लिखा है – “प्रत्येक उपन्यास में कोई उद्देश्य या लक्ष्य अवश्य रहता है। उपन्यास का ध्येय केवल मनोरंजन या लंबी रातों को काटकर छोटा करना नहीं है, वरन् जीवन संबंधी कुछ तथ्य देना या मानव मन का निकट परिचय कराना है।” प्रस्तुत उपन्यास प्रतियोगी छात्रों के जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति के साथ-साथ उनके मनोबल को बढ़ाने के अपने उद्देश्य को व्यक्त करने में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

सार.

प्रस्तुत उपन्यास कथा तत्वों के मानकों पर खरा साबित होता है और छात्र जीवन पर आधारित वर्तमान समय में लिखे गए अपने समकालीन उपन्यासों में ‘मील का पत्थर’ माना जा सकता है। आईएस निशांत जैन के अनुसार “इसके कथानक में हर सिवल सेवा अभ्यर्थी की कहानी को बयां करता हुआ पहला प्रौण उपन्यास है। जिसमें प्रतियोगी छात्रों के जीवन को इतनी नजदीकी से कागजों पर उतारा गया है।” यह उपन्यास सफलता की ऊँचाइयों को छूने में सफल रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची.

1. राय, डॉ. विवेकी, समकालीन हिंदी उपन्यास, राजीव प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 1987
2. सिंह, डॉ. नामवर, आधुनिक हिंदी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 2010
3. राय, गोपाल, उपन्यास की रचना, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2012
4. मृणाल, नीलोत्पल, डार्कहॉर्स, हिन्द युग्म प्रकाशन, नोएडा, पहला संस्करण, 2017

5. वही , पृष्ठ संख्या – 172 , 174
6. वही , पृष्ठ संख्या – 19 , 20
7. वही , पृष्ठ संख्या – 20 , 21
8. वही , पृष्ठ संख्या – 09

शोध-निर्देशिका

डॉ० हेमलता सुमन

नारायण कॉलेज , शिकोहाबाद

फ़िरोज़ाबाद (उत्तर प्रदेश)

शोध-छात्र

आजाद

शोध विषय – हिन्दी